

बाख चोराशी योनिमां, फरी बियो अवतार। एकेकी योनि वली, अनंत अनंती वार ॥६॥ चेंद्र राज परमाणुळा, सूई छाप्रजाग ठाम । कर्मवशे जीव तुं जम्यो, मूरख चेतन ताम ॥॥॥ निगोद सूक्म वादरे, पुजल अनंत ऋपार । एतो काल तुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार ॥ण। श्वास उच्हासा एकमां, मरगा सत्तर छाध कीध। मूक्म निगोदमांहे वली, ए जिन वचन प्रसिद्धाएग नरय विगलेंडी तिर्यच गति, जब कीचा बहु हेव। जवनपति ब्यंतर ज्योतिषी, और विमानिक देव॥१०॥ इम जमतां जमतां खियो, मनुख जनम खवतार। मिथ्यात्वपणे जव निर्गम्या, काज न सीध लगार॥१८॥ जगमां जीव छाठे वहु, एकद्युं छानन्ती वार। विविध प्रकार सगपण कियां. हेया साथ विचार॥१२॥ तो कुण आपणुं पारकुं, कुण वेरी कुण मित्त । गग हेप टाली करी, कर समता इक चित्त ॥१३॥

उत्तम कुल नर जव लही, पामि धर्म जिनराय। प्रमाद मूकी की जिये, खिए खाखी एो जाय ॥११॥ जिसुं कीजे तिसुं पाड्ये, करे तैसा फल जोय। सुख डुःख ञ्राप कमाइये, दोष न दीजे कोय॥१३॥ दोष दीजे निज कर्मने. जिए निव कीधो धर्म। धर्म विना सुख नवि मले, ए जिन शासन मर्म॥१४॥ वावी कूरी कोदरी, तो क्युं बुणीये शाख। पुण्य विना सवि जीवमा, आशा आल पंपाल ॥१५॥ आय पहोती श्रातमा, कोइ निव राखण हार। इंड चंड जिनवर वली, गया सवी निरधार ॥१६॥ मोहोढा मोढ न की जिये, न की जे मोहोटी वात। कोमी अनंतमें वेचियो, त्यारे किहां गइ जात ॥१९॥ त्र्यापसरूप विचार तुं, जो हुइ हियमे शान । करणी तेहवी कीजिये, जिम वाधे जग वान॥१०॥ वमपण धर्म थाये नहीं, जीवन एले जाय। तम्ण पणे धसमस करी, पठे फरी पठताय ॥१ए॥

पाप कियां जीव तें वहू. धर्म न कियो खगार। नरक पड्यो यमकर चड्यो, तिहां करे पोकार ॥३०॥ कोई दिन राएयो राजियो,कोई दिन जयो तूं देव। कोई दिन रांक तु अवतस्यो,करतो ओरज सेव ॥३०॥ कोई दिन कोमी परिवयों, को दिन नहीं को पास। को दिन घर घर एकखों, जमे सही ज्युं दास ॥४०॥ को दिन सुखासन पालखी,जेठमची चकमोल। न्यपाला त्र्यागल चले. नित नित करत कलोल ॥४८॥ को दिन क्र कपूर तृ, जावत नहीं लगार। को दिन रोटी कारणे, जमनो घर घर बार ॥४०॥ रीर पीर पंग पहेरियां, चुत्र्या चंद्रन बहु खाय। मो तन जनन करन मो, किलमांही विघटाय ॥४३। रणामे गोप तुं शोजतो, कामिनी जोग विलास । ८१ रिन धोडी लाउँग् रहेणो ही बनवास ॥ध॥ र परेष कुमार सम, देख मोद्दे नर नार। मा नर पिण एकमां वर्षी, बिल जिल होवे हार॥४५।

नारी वदन सोहामणुं, पण वाघण व्यवतार । जे नर एहने वश पड्या. तस खूंट्या घर वार ॥५४॥ हसतमुखी दीसे जली, करित कारमो नेह। कनकलता वाहिर जिसी, अन्तर पित्तल तेह ॥५५॥ पहेली प्रीत करि रंगद्यं, मीठा वोली नार। नरने दास करि छापणो, मूके टाकर मार ॥ ५६॥ नारी मदन तलावकी, बूड्यो सयल संसार। काढणहारो को नहीं, बुमा बूंव नवार ॥५९॥ वीश वसाना जे नरा, कोइ नहीं तस वंक। नारी संगति तेहने, निश्चें चढे कलंक ॥५०॥ मुज ने चंक प्रचोतना, दासी पति पाम्या नाम। अनयकुमार वुद्धि आगलो,तेह ठग्यो अनिराम।५ए। -नारी नहि रे वापमा, पण ए विपनी वेख ॥ जो सुख बांठे सुक्तिनां, नारी संगति मेख ॥६०॥ नारी जगमां ते जखी, जिए जायो पुरुष रतम् । ते सतिने नित पाय नमुं, जगमां ते धन्न धन्न ॥६१॥

पूर्व कोमिने छाउखे, पाली चारित्र सार। सुकृत सुणा सवि तेहनुं, क्लमां होवे ठार ॥१०॥ पर व्यवगुण सरशव समी, व्यवगुण निज मेरु समान। कां करे निंदा पारकी. मूरख आपण ज्ञान ॥७१॥ पर व्यवगुण जिम देखिये, तिम परगुण तुं जीय। परगुण लेतां जीवका. अखय अजरामर होय ॥११॥ कोधी नग अने सदा, कहिये जे जलटी रीश। ने ठोमी घुर त्रातमा, रहे जोयण पण्वीश ॥<sup>५३॥</sup> गुण की भा माने नहीं, त्र्यवयुण मांकी मूल । ने नर सगिन गांकिये, पग पग मां घासूल ॥<sup>98॥</sup> निहा करे के लापणी, ते जीवो जगमांय । मा मात्र भीए परतलां, पते व्याचीगति जाय ॥११॥ र मार मार थाए रादा, गुणवतना निज्ञदीस । र कर्जन करी में। घणं, जगमां को कि वरीस ॥७६॥ र 👉 🚓 केन किस जाणिये, जब सुख वोले बाण । र ११ स्टराप्त खेर फुरान विपनी स्ताण ॥५०॥



रे जीव सुण तु वापका, म करिश गर्व गंवार। मृख स्वरूप देखी करी, निज जीवशुं तुं विचार ॥ ६६। कमें को निव वृटिये, इंड चंड नरदेव! राय राणा मंमलिक वली, अवर नरज कुण हेव ॥ छ॥ वरस दिवस घर घर नम्या, आदिनाथ नगवंत। कर्म वजे दुख तिऐ लह्यां, जे जगमां वलवंत ॥एए॥ पान जिएंड प्रतिमा रहि, उपसर्ग कियो सुरिंड ते उपमगेने टाखियो, पद्मावति धरलेंड ॥७९॥ राने गीवा वालिया, चरणे रांधी खीर। ते निर्मे तमे नमरो. चोविसमो श्रीवीर ॥ए०॥ मंभी गापा तप करी, पाम्या स्त्री व्यवतार । मग्यि रोधी में गाकरी कमेनो एउ प्रकार ॥णशा कर जिल्लामाणाः जन<mark>्त नरेसर राय ।</mark> ्रारिशार मनाश्यित ज्याज समे कहेवाय ॥<sup>००॥</sup> - । वर्षे च वर्षिः जेदनो विषमो वंध । २८४ १ । ३३३७ सोल वास खंग शंभ ॥<sup>००३॥</sup>



पांचशे रामा तजी, लीधो संयम जार। दश दश नंदिपेण बूजवी, नर कोश्या दरवार ॥१०१ वांधी तांतणा सूत्रना, विंट्यो छाईकुमार। सुन मोहनी वहा रहा। पि वियो संजम जार ॥१०३ पंचसया मुनि नेमना और श्रीपासना वार। जांग कारण संयम तजि, मांड्यो तिणे घरवार ॥१०६ नवाणुं कोमी कंचन तजि, खोर तजि खाठे नार। ते दुःकर नित वंदिये, श्रीजंबू त्रण काल ॥रण्या एक कन्या को की कंचन, तिज जे ले विल घूर। वयरस्वामि ते वंदीये, नित जगमते सूर ॥१०६। नवाणुं पेटी सुरतणी, नित नित होय निर्माख्य नरतव मुरमुख जोगवे, ते शाखिजङ कुमार ॥१०९ रन्न कंवलने कारणे, श्रेणिक खाद्यो वार । गोप यकी बोली रह्यो, लीयो संजम नार ॥१००॥ त्यात्र नारी जेणे तजी, ते धन्नो धन धन्न । नारी दाम्य संयम लीयो राज्यु जाम जिले मझ।?

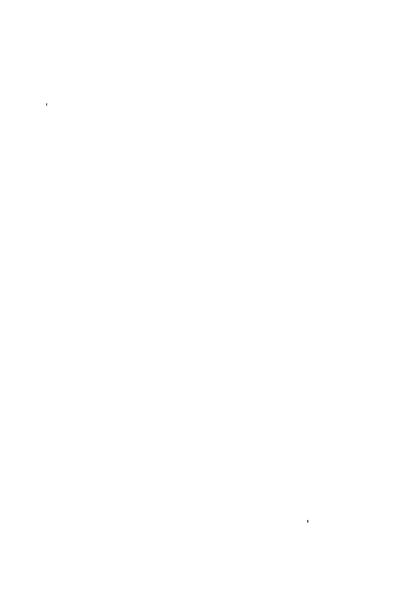
वंदी वीर गुमानद्यं. दशार्णजङ नर्गसंद् । सुरपति पाय लगा नियो, जग राखी जिए लीह १३४॥ प्रसन्नचंड काउसग्गमां, कोपी युद्ध करंत। कोप शम्यो केवल लह्यं, मोहटो ए गुण्वंत ॥१३५॥ च्यइमतो सुकुमाल मुनि, वखाएयो वीर जिएंद। इरियावही पिकक्रमतां, केवल लह्यं आएंट ॥१३६। वीरजिनवचने थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मेघकुमार। जातिसमरण पामियो, करि दो नयणां सार॥१३९॥ हाट वेचाणी चंदना, सुनदा चह्युं कर्लंक । दमयंती नखिवयोग खह्यो, एह कर्मनो वंक ॥<sup>१३०</sup> कलावती कर वेदिया, झोपदी काट्यां चीर। ऋग्नि **शीतल सीता कस्त्रो, शील गु**णे थयुं नीर <sup>१३</sup> चंदना चरण मृगावती, खमावि निज अपराध । केवल लहि गुरुणी दियों, दोजीव टल्यो विषवाद<sup>१४</sup> चंद कलंक सायर कर्यों, खारो नीर किरतार।

नवसो नवाणुं नदी तणो, देखो ए जरतार ॥१४१

वान शिवत त्रा कार्यना, प्राप्त । । । । व प्रसामना को सन्सन्ति। स्थान स्थान स्थान वान सुपाने दी जिंग, तम प्रायनी सी पाम । सुख संपनि टाहिने पणी, मणि मोती ने नाम।।गायः भन्नो सारापित जुता, घर तोठगर्णं मृति हा<sup>ल ।</sup> दानप्रनावे जीवमा, प्रणम इता लाहिनाण॥१<sup>००॥</sup> दान दियो धन सार्यी, जानंद हुई छपार। नेमनाय जिनवर हुवा, यादव कृल गिणगार॥१॥३॥ कलश्रीकेरा रोटला, छीतुं मुनितर दान ।

वासुपूज्य जब पाठले, जिनपद खखं निदान ॥१५४ मुनी मख्यो एक मारगे, वोहराव्या तस छाहार।

साय महयो ते सार्यी, ते वीर जगदाधार ॥१५५॥। सुलसा रेवति रंगद्यं, दान दियो महावीर। तीर्थकर पट पामशे, बहेशे ते जबतीर ॥१५६॥ दाने जोगज पामिये, शियले होय सोजाग । तपकरिकर्मज टाखिये, जावना शिव सुख मांग<sup>१५९</sup>



निण गरने चीट चीत्रमें, नम को गाडीन ! पत्री मरी पाने तो रंड, सर सर सो शिष ॥ जन ॥११॥ महिद्या तस्य पंतातने, करित निर्वात ॥ पंचीतरे वरस पने, पाए प्रम प विज्ञा उल ॥१०॥ जिमणि कूखे नर परंग, निम पामी नार ॥ परंगः नपुंसक जाणिये, जिनवनने विचार ॥ ए० ॥१३॥ ह्वेसामान्य पणे इहां, जाठया गर्नातास ॥ सात-दिवस ऊपर रहे, नरगित नवमास ॥ उ० ॥१४॥ ञान वरस निर्यच् रहे, उत्कृष्टो काल ॥ गर्नावाः से जोगव्या, इम बहु जंजाल॥ उ०॥ १५॥का-र्मणकाये करि लीयो, पहिलो ने त्र्याहार ॥ शुक्र-अने शोणित तणों, नहिं फूछ खगार ॥ उ० ॥१६॥ -पर्याप्ति पूरी नहीं, तिहां विसवा वीश ॥ ति ए आहारे तनु ययो, ओटारिक अरु मीस ॥ उ०॥ रष्ठ ॥ पवन आवे उदरथकी, ते उपजावे छंग ॥ चित्र करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ उ० ॥

त्यावमे माने नीपनं, एम सहत शिर वेढन सहे, जंपे थ्री जिन र्न शोणित सुक संबेपमा, बतुने व पित्त कफ गर्न में. ए याये इण र मात नणी इंटी लगे, बालकनं । हार तणो तिहां, त्रावे ननकाल जननी ले ब्याहार ते. जाए नामे इंडी नख चख वधे, तिम मज्जा ॥ ३० ॥ सिवदुं छंगे उद्घसे. स कवल आहार करे नही, गर्ने इस ॥३१॥ ते गर्ने किए जीवने, श्राय अथवा अवधि कही जिये, तिए उ० ॥ ३१ ॥ कटक करी वैक्रिय प जाय ॥ को जिनवचन सुणी करीं " याय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखे गुर वहु पीम ॥ दृष्टि आगल विहुं हा काम विकार ॥ उ० ॥ ५० ॥ जिए थानक तुं-जपन्यो, तिएमें मन जाय॥ चोथे दशके धन-तणा, करे कोिम जपाय॥ उ०॥ ५१॥ पहोतो-द्शके पांचमे, मनमां ससनेह ॥ वेटा वेटी ने-गोतरा, परणावे तेह ॥ उ० ॥ यश ॥ ववे दशके-प्राणियो, वसी परवश थाय ॥ जरा त्र्यावी यौवन-गयुं, तृष्णा तोय न जाय ॥ उ० ॥ ५३ ॥ ऋाट्यो-दशके सातमे, इवे प्राणी तेह ॥ वल जांग्युं बूढो-थयो, नारी न धरे नेह ॥ उ० ॥ ५४ ॥ आठमे-दशके मोसलो, खुलीया सहु दांत॥ कर कंपावे-शिर घुणे, करे फोकट वात ॥ उ०॥ एए ॥ नवमे-दशके प्राणियो, तन शक्ति न कांय ॥ साले-वचन सह तणां, दिन फ्रतां जाय ॥ उ० ॥५६॥ लाट पड्यो खूं खूं करे, सुगालो देह ॥ हाल-किम हाले नहीं, दिये परिजन ठेह ॥ उ० ॥ ५७ ॥ श्रांख गले वे पम मिले, पमे मुहमे लाल । संसारनां मुख जोगवी, ते खहे जवपार ए॥ श्रीरत्नह्षेमु शिष्यरंगे, इम कहे श्रीमार ए॥ ११॥॥

इति गर्भवेर्या । जीवनी उत्पचिनुं स्तयन संपणि ।

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंज ॥ हवे राणी पट्मावती, जीवराशि खमावे॥ जाण पणुं जग ते जातुं, इल वेला छावे॥१॥ ते मुज मिच्ठामि दुक्क मं, अरिहंतनी साख॥ ज में जीव विराधिया, चलराशी लाख ॥ ते० ॥ १॥ सात खाख पृथिवीतणा, साते अप्काय ॥ सात-लाख तेजकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चोदह साधारण ॥ वीति ं चर्जारेदी जीवना, वे वे लाखं विचार ॥ ते०॥४॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ च<sup>तु</sup> दह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥तेण॥ या इण जवे परजवे सेवियां, जे पाप खढार॥ त्रिविधः

त्रिविध करी परिहरुं, छुर्गतिनां दातार ॥ तेणाद्॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोख्या मृपावाद ॥ दोप श्रदत्तादानना, मेथुन जन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परि-यह मेख्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोज में कीया, वली राग ने द्वेप ॥ तेव ॥ ७ ॥ कलह करी जीव घूहच्या, दीधां कूमां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी कीधी चोतरे कीधो श्रापण-मोसो ॥ कुगुरु कुद्देव कुधर्मनो, जलो श्राएयो जरो सो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने जवे में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चकीमारजवे चरकलां, मास्या ′ दिन रात ॥ ते०॥ ११ ॥ काजी मुख्खाने जवे,पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक फन्ते कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥ ११ ॥ माठीने जवे माठलां, जाख्यां जलवास ॥ धीवर जील कोली जवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने जवे में

कीयाः नाहम हरदन् ॥ नंदीनान मगनियाः कोरमा नभी दंग॥ वेण॥ १८॥ गरमाभामीन तवे, दीभां नामकी फु:म ॥ वेदन नेवना नायन अति निम् ॥ नेव ॥ १ए ॥ क्ंनारने जने-में किया, नीजान पनाव्या ॥ तेली जबे तिल पीलिया, पांप पिंक जराव्या ॥ नेव ॥ रह ॥ हाली जवे हल खेरीयां, फाटमां पृथ्वीनां पेट ॥ स्र निदान घणां किया, टीधां घटाट् चपेट । ने<sup>0</sup> ॥ १९ ॥ मालीने जबे रोपिया, नानाविध वृक् ॥ मृल पत्र फल फ़्लनां, लागां पाप ते लक् ॥ तेण ॥ १७॥ अधोर्वाईयाने जवे, जम्बा अधिका जार॥ पोठी पूठे कीमा पड्या, द्या नाणी लगार ॥ते० ॥ रए॥ ठीपाने जवे ठेतस्या, की धां रंगण पास ॥ अग्नि आरंज कीधा घणा, धातुवाद अज्यास॥ तेण ॥ १ण ॥ शूरपणे रण ज्रुकता, मास्त्रां माण-सबृंद ॥ मदिरा मांस माखण जख्यां, खाधां मूल

ने कंद् ॥ ने० ॥ २१ ॥ म्वाण खणावी धातुनी, पाणी उद्वेच्यां ॥ त्यारंत कीधा व्यतिघणा, पोते पापज संच्यां ॥ ने० ॥ २२ ॥ कर्म श्रंगार कीया वली. ट्रमें द्व दीधा ॥ तम खाधा वीतरागना, कृमा कोसज की था॥ ने०॥ १३॥ विख्ली जवे जंदर लीया, गिरली हत्यारी ॥ मृह गमार तणे नवे, में जृ लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ जामजुंजा तणे जवे, एकंडिय जीव ॥ ज्वारि चणा गद्रं शे-किया, पार्नतां रीव ॥ ते० ॥२५॥ ग्वांकण पीसण-गारना. आरंज अनेक॥ संधल इंधल अग्निनां कीधां पाप उद्देक ॥ ते० ॥ १६ ॥ विकया चार कीथी वली. सेट्या पांच प्रमाद ॥ इप्टवियोग पाच्या कीया, कट्न विषवाद ॥ ते०॥ २०॥ साध् श्रने श्रावक तणां, त्रन बहीने नांग्यां॥ मृब श्रने उत्तर नणां, मुक हूपण लाग्यां ॥ त०॥ १० ॥ साप वीठी सिंह चीवरा, शकराने समली॥ हिंसक

जीव तणे जवे. हिंसा कीभी सपती ॥ नेवाएणा स्वावकी हूपण घणां, वली गर्न गलाव्या ॥जी-वाणी ढोल्यां घणां. जील वत जंजाव्यां ॥नेणा३ण। नव अनंत नमतां प्रकां, की धा देद संबंध॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिण्छुं प्रतिवन्ध ॥ तेष ॥ ३१ ॥ जब अनंत जमतां श्रकां, कीधा परियह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी बोसिरुं, तिएशुं प्रतिवन्ध ॥ तेण॥ ३२॥ जव स्त्रनंत जमतां यकां, की धा कुटुंचसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिण्जुं प्रतिवंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इहजव परजवे, कीधां पाप द्याखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥तेण।३४॥ एणि विधे ए आराधना, नावे करशे जेह ॥समय सुंदर कहे पापथी, वली **ट्ट**को तेह ॥ ते०॥३८॥ राग वेरामी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी, हुटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥ ॥ इति पद्मावती ॥

## ॥ अय श्री हमावत्रीशी प्रारंत्र॥

श्रादर जीव कमाग्रण श्रादर, म करिश रागने देव जी ॥ समताये शिव सुख पामीजे, कोधे कुगति विशेष जी ॥ आ० ॥ १ ॥ समता संजम सार सुणी जे. कटपसूत्रनी साख जी॥ कोध पूर्वकोिक चारित्र वाले, जगवंत इणी परे नाख जी ॥ ऋाण ॥ २ ॥ कुण कुण जीव तस्त्रा जपसमयी, सांजल तुं दृष्टांत जी ॥ कुण कुण जीव जम्या जवमांहे, क्रोध तणे विरतंत जी। था। ।। ३॥ सोमल ससरे शीश प्रजाब्युं, वांधी माटीनी पाल जी॥ गजसुकुमाल कमा मन धरतो, सुगति गयो ततकाल जी ॥ त्रा० ॥ ४ ॥ कुलवालुख्रो साधु कहातो, कीधो क्रोध खपार जी ॥ कोणिकनी गणिका वश पिनयो, रमविनयो संसार जी ॥ त्रा० ॥ ए ॥ सोवनकार करी त्राति वेदन, वाध्रज्ञुं वींटियु ज्ञीज्ञ जी ॥ मेतारज ऋषि

मुक्ति पोहोतो, उपराम एह जगीरा जी ॥ आण ॥ ६॥ कुरुम वुरुम वे साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी ॥ क्रोध करी ते कुगते पहोता, जनम गमायो आल जी ॥ आ०॥ ७॥ कर्म खपावी सुगते पहोता. खंधक सूरिना शिष्य जी ॥ पालक पापीय घाणी पीट्या, नाणी मनमां रीश जी॥ ञा०॥ ७॥ अचंकारी नारो अचुकी, त्रोङ्या पीयुशुं नेह जी॥ वब्बर कुल सह्यां डुःख बहुलां. कोभ तणां फल एइ जी॥ आ०॥ ए॥ वाघण र्मा गरीर विद्युम्यु, नतक्ष ठोड्यां प्राण जी॥ मामु मुक्तेशल जिब सुख पाम्या, एह इसा गुण जाण जी ॥ त्या०॥ १०॥ कुण चमाल कहीजे । विटमें, निरित नहीं कहे देव जी ॥ कृषि चंमाल महीय वमतो, टालो वेडनी देव जी॥ आ०॥ ११॥ मानमी नम्क गयो ने ब्रह्मदत्त, काही नदा यांच जी॥ क्रोध नणां फल कमुयां

जाणी, राग द्वेप यो नाय जी ॥ श्रा० ॥ ११ ॥ संधक क्षिनी खाल जतारी, सहा। परिसह जेण जी ॥ गरजवासना छुःखथी तृट्यो, सवल कमा गुण तेण जी ॥ छा० ॥ १३ ॥ क्रोध करी खंधक छाचारिज. हुओ अग्निकुमार जी ॥ दंसक नृपनो देश प्रजा-ल्यो. प्रमशे प्रवह मजार जी॥ श्रा०॥ रध ॥ चंड-रोंद्र छाचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी॥ क्सा करंनां केवल पाम्यो, नव दी क्षित व्यणगार-जी ॥ श्रा॰ ॥ १५ ॥ पांच बार इपिने संताप्या. श्राणी मनमां द्वेप जी ॥ पंच नव सीम दह्यो नंद नाविक, क्रीध तणां फल देख जी॥ आ० , ॥ १६ ॥ सागरचंदनुं शीस प्रजाली, निशि नज-सेन नरिंद जी ॥ समता जाव धरी सुरलोके. प-हुतो परमानंदजी ॥ त्र्या० ॥ र७॥ चंदना गुरुणीय घणुं निचंठी, धिग् धिग् तुज अवतार जी॥ मृगा-वती केवलिसिर पामी, एह क्तमा अधिकार जी

॥ ञ्रा० ॥ १० ॥ सांव प्रद्यम्न कुंवर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध करी तपनुं फल हास्त्रो, कीधो द्वारिका दाह जी॥ आ०॥ १ए॥ जरतने मारण मूठी जपामी, वाह्रवल वलवंत जी ॥ जपशम रस मनमांहे आणी, संजम ले मति मंत जी ॥ व्या० ॥ २० ॥ कानसग्गमां चिमयो अतिक्रोधे, प्रश्नचंद्र क्रिपराय जी ॥ सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कमुआं तेण कपाय जी॥ ञा०॥ ११॥ ञ्राहारमांहे क्रोधे क्रिव यूंक्यो, आएयो अमृत जाव जी ॥ कूरगकुये केवल पा-म्युं, क्मातणे परनाव जी ॥ आ०॥ ११ ॥ पार्श्व-नाथने जपसर्ग कीथा, कमठ जवांतर धीठ जी॥ नरक तिर्यच तणां इःख लायां, क्रोध तणां फल दीव जी ॥ त्राण ॥ १३ ॥ क्मावंत दमदंत मुनी-श्वर, वनमां रह्यो काजसग्ग जी ॥ कौरव कटक हण्यो ईटाले, त्रोड्या कर्मना वर्ग जी ॥ आ०॥

१४॥ सय्यापालक काने तरुष्ट्रो, नाम्यो कोध उदीर जी ॥ चेहु काने खीला ठोकाणा, निव बृटा महावीर जी ॥ घा० ॥ १५ ॥ चार हत्यानो कारक हुंतो, दृढप्रहार छतिरेक जी ॥ कमा करीने मुक्ते पहोतो. उपसर्ग सद्या अनेक जी ॥ थ्याण् ॥ १६ ॥ पहुरमांहे उपजतो हास्त्रो. क्रोधे केवल नाण जी ॥ देखो श्रीदमसार मुनीशर, स्त्र गुएयो जनाण जी ॥ त्रा० ॥ १९ ॥ सिंह गुफावासी कृषि कीधो. शृखिनड ऊपर कोप जी॥ वेश्या वचन गयो नेपाले. कीधो संजम लोप जी ॥ श्रा० ॥ १७ ॥ चंडावतंसक काउसग्ग रहियो, क्मा तणों जनार जी॥ दासी तेल जस्वो निशि दीवो, सुरपदवी बहे सार जी ॥ व्या० ॥ २ए ॥ इम छानेक तर्या त्रिजुवनमें, इतमागुण जिव जीव जी ॥ क्रोध करी कुगते ते पहोता, पामंता मुख रीव जी ॥ घ्या० ॥ ३० ॥ विप हालाहल कहीये

विरुळो, ते मारे एक बार जी ॥ पण कपाय अनंती वेला, आपे मरण अपार जी॥ आ०॥ ३१ ॥ क्रोध करंतां तप जप की धां, न पमे कांई गम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं के हो काम जी ॥ आ० ॥ ३१ ॥ क्तमा करंतां खरच न लागे, जांगे क्रोम कलेश जी॥ अरिहंत देव छाराधक थाये<sub>,</sub> व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ छा□ ॥ ३३ ॥ नगरमां है नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासादजी ॥ श्रावक लोक वसे छिति सुखिया, धर्मतणे परसाद जी ॥ छा० ॥ ३४ ॥ क्मा ठत्रीशी खांते कीधी, आतम पर उपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण समज्या, उपराम धर्यो खपार जी ॥ खा० ॥ ३५॥ जुगप्रधान जिणचंद सूरीशर, सकलचंद तसु शिष्य जी ॥ समयसंदर तसु शिष्य नाणे इम् चतुर्विध संघ जगीश जी ॥ ३६॥

इति क्षमाछत्रीशी ।

( gu )

अत्र श्री वंघकम्निगजनु चेहिलियुं॥ ॥ याल १ ली ॥ नम्ं चीर ज्ञानन घणी जी. गणघर गोयमं म्बान ॥ क्या व्यनुमार गायको जी, वंधकता गुणप्रास ॥ १॥ कमावंत जीव तगवंतनु जी इतन ॥ ए प्रांकणी ॥ व्यनि इतमा प्यधिकी करी जी, लेजम धारी जी जान ॥ शिवमारगने कारणे ती. रहेना धरमने खान ॥ १॥ जा ॥ खचा इतारी देहनी जी. रहता ममताजी जाव ॥ जिनधमें कीथों दीपता जी, महोटा ए मुनिराव ॥३॥ इ० ॥ सावत्यी नगरी शोतती जी, कनकंग्तु निहां ज्य ॥ राणी मलयासंदरी जी, वंभक कुंबर ध्यन्प ॥ ४॥ ६० ॥ सघला ग्रंग संदर्भ जी. इंडी नहीं एक हीए॥ प्रथम वयं चहती कला जी. चतुर कला प्रवीण ॥ ए॥ हा। विजयमेन गुरु ग्रावीया जी, साधु तरे।

कुं०॥ सं०॥ उत्तर पमुनर बहु हुना जी, बाप वेटानेजी माय ॥ सूत्रमांहे विस्तार तेजी. हेजो चतुर लगाय ॥ ३३ ॥ कुं० ॥ सं० ॥ चिनमं दीधी त्र्याङ्गा जी. करी महोटे मंमाण ॥ जिविकामां वेसामीने जी, सोंप्यो साधुने त्र्याण ॥३४॥ क्०॥ इप्र अत्यन्त वालो हुतो जी, स्वामी महारे ए पुत्र ॥ मरियो जामण मरणयी जी. सोंप्यो तुम कर सुत ॥ ३५ ॥ ऋ० ॥ सिंहपणे व्रत छादरोजी, पालजो सिंहनी जेम ॥ घणुं पराक्रम फोरजोजी, मात पिता कहे एम ॥ ३६ ॥ कु० ॥ इम शीखा-मण देइ करी जी, आया जिए दिशि जाय ॥ खंधकने जले जावशूं जी, दीक्ता दीनि मुनि<sup>.</sup> ' राय ॥ ३७ ॥ क० ॥ आज्ञा मांगी साधु तणी जी, सूत्र अरथ लिया धार ॥ जिन कलपी पणुं श्रादस्तुं जी, एकलमल श्राणगार ॥ ३० ॥ क्वा मिलि शिरदार रायने कह्यं जी, ए नानिकयो

जी वाल ॥ सिंहादिकना जय तणा जी, कर-वावो रखवाल ॥ ३ए॥ क्षण ॥ पांचशे जोधा वोलावीने जी, दीया कुंवरनेजी लार ॥ ते साधु ने खवर नाहिं जी, साथे वहे शिरदार ॥ ४०॥ क्षण ॥ सावित्य नगरीशुं चालियो जी, कुंती नगरी जी जाय ॥ नगरी वहिनोई तणी जी, शंका न आणी कांय ॥ ४९॥ क्षण ॥

# ॥ दोहा ॥

पांचशे तिण श्रवसरे, खावा पीवा काज।
वली वली चलता रह्या, एकल रह्या मुनिराय ॥१॥
हवे किम जठे गोचरी, उपसर्ग व्यापे केम।
एक मना थइ सांजलो, मुनि करे ठे जेम॥ १॥

॥ हाल १ जी ॥

तिण अवसर मुनिराय, कुंति नगरीमांहे. सुकोमल साधु ॥ विहरण विरियां पांग्रस्या ॥ १॥ वाजे खुवर काल, दाके पग सुकुमाल ॥ सु०॥

तणों ए ॥ ११ ॥ माठुं विचारी राय, मसाण नूमि ले जाय II सु**० ॥ त्वचा जतारो एहनी ए ॥ १**१ ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा जावो धाय ॥ सु०॥ इण साधुने पकनी लीयो ए॥ १३॥ मत करजो कांइ कांण, ले जायजो समसाण ॥ सु०॥ सघली खाल जतारजो ए॥ १४॥ नफर सुणी इम वाण, करी लीधी परमाण ॥ सु० ॥ अजाणचक्र राजा-यने ए॥ १५॥ पकड्या मुनिना हाथ, मसाण जूमि ले साथ ॥ सु०॥ खाल जतारवा देहनी ए॥ १६॥ माहरो नही वे दोष, मुनि म करो कोइ रोप ॥ सु॰ ॥ करप्या क्रपज समीकरे ए, · ॥ १९ ॥ मसाण जूमिका मांय, काया दीधी वो-सिराय ॥ सु॰ ॥ चारूं आ्राहार त्यागी दीया ए ॥ १७॥ करको छावी वन्यो काम, न कह्यं छा-पणुं नाम ॥सुन। सगपण को दाख्युं नहि ए॥१ए॥ राख्यो समता जाव, संजम ऊपर चाव ॥ सु॰ ॥

मने करीने मोख्या नही ए॥ १०॥ तीखा पाठ-णानी धार, मसतक ऊपर प्रहार॥ सु०॥ खाल उतारी देहनी ए॥ ११॥ पगां सूधी खाल. रहिता संजममां जाल॥ सु०॥ नाके सल घाढ्यो नही ए॥ ११॥ रह्या ते रूके ध्यान, पाम्या केवल ज्ञान॥सु०॥ करम खपावी मुगते गया ए॥ १३॥ केवल महिमा होय, धन धन करे सह कोय॥ सु०॥ जिनमारग कियो दीपतो ए॥१४॥

# ॥ दोहा ॥

कुंती नगरीनी मध्ये, हुवोज हाहाकार। देखो राय मरावीयो. विना गुने छाणगार॥१॥ लोक हुवा सहु छागला, जोर न चाले कोय। मुनिने मोक्त सिधावणो, पण वेर न ठोने कोय॥१॥ किम वूजे पांचशे सुनट, विल राणि ने राय। वेर खवर किण विध पमे, ते सुणजो चित्त लाय॥३॥

# ( ५५ )

#### ॥ ढाल त्रीजी ॥

धरम हिये धरो ॥ ए देशी ॥ हजी साधु आयो नहीरे, जोवे पांचशे वाट ॥ जलामण दीनी रायजी रे, इ.ण इ.ण करे उचाटो रे ॥ धन्य महोटा मुनि॥ नित्य कीजे गुण यामो रे॥ घ० ॥ सीजे सघलां कामो रे ॥ १ ॥ घ० ॥ नगर गली फरी जोयता रे, किहांइ न दीठो रे साथ॥ सुएयो साधु मास्त्रो गयो रे, तव परमारच लाधो रे ॥ १ ॥ ध० ॥ राजा पूछे कुण तुमे रे. तव वलता कहे जोध ॥ कनककेतुना रजपूत मं रे, तुमे करी बात अयुक्तो रे ॥३॥४०॥ खंधक कुंबर दीका लेइ रे, अमे रखवालाजी लार ॥ सो मुनिवर ते मारीयो रे. न सरी गरज लगार रे ॥ ४ ॥ घ० ॥ वचन सुणी जोघा तणां रे, राय डुवो दिलगीर ॥ हाहा पाप जामां कीयां रे, मास्त्रो राणीनो वीर रे ॥ ५ ॥ घ० ॥ राणी

वात सुणी तिसे रे. लागो मरम प्रहार ॥ मृर-वागत धरणी ढलीरे. व्टी छांसूमानी धार रे॥ ६॥ ध०॥ वंधव जव सफलो कीयो रे, तोड्या मोहना रे फंद ॥ हुं पापणी किम तृटशुं रे, इम ते करे आकंद रे॥ ७॥ घ०॥ लोहीये खरमी मुह्पती रे, समली महेलमां राल ॥ वहिन सुनंदा देखीने रे, जठे मोहनी जाल रे॥ ए॥ थण॥ जिम जिम जाइ सांजरे रे, आणे रागने द्रेष ॥ वीरा वेगो आवजे रे, हुं नजरे लेखं देख रे ॥ ए ॥ घ० ॥ कुण वीरो कुणवहिनकी रे, जो जो मोहनी वात ।। **इण** जव मुगति सिधावणुं रे, एम करे विलपात रे॥ १०॥ घ०॥ इम जाणी ने मानवी रे; मोह न करशो रे कोय ॥ मोह कियां दुःख जपजेरे, करमवंध वह होय रे ॥११॥ ॥ घ०॥ सालो सगो नवी जाणीयो रे, तपसी महो-टो रे साध ॥ पुरुषासिंह राजा कुरे रे, वहोत लग्यो

श्रपराध रे ॥ ११ ॥ घ० ॥ पांचशे जोधा इम चिंतवे रे. मस्त्रो गयो मुनिराय ॥ कनककेतु राजा कने रे, कांइ कहेशुं तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ घ० ॥ चारित्र ख्यो हवे चोंपशुं रे. किसो सास वीशवास ॥ काल कितो इक जीवणो रे, राखो मुगतिनी श्राश रे ॥ १४ ॥ घ० ॥ निश्चे करी संजम लीयो रे, पांचशे जोधा शिरदार ॥ चोखो पाली सुरगति लही रे, विल करशे जव पा रे ॥ १८ ॥ घ० ॥

॥ दोहा ॥

ह्वे राजा मन चिंतवे, एहवुं खून न कोय। साधु मारण मन ऊपनुं, ए संशय वे मोय॥१॥ , इम विचारी वंदण गयो, साधु जणी कहे एम। विणा गुनहे महोटो मुनि, मे मास्यो कहो केम॥१॥

॥ ढाल ४ थी ॥

वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए दशी ॥ साधु कहे राय सांजलो, तूंतो हूतो हो काचरनो जीव ॥ ए संधक मानव हतो, चतुराई हो धरती रे अतीव ॥ सा० ॥ र ॥ करम न होमे केहने. त्रीखारी हो कुंण राणो राव ॥ कुंण साभुने कुंण चोरटो. जला जुंमा हो सहु होवे नाव ॥ २ ॥कणी पिठला जब इण खंधके. ऊतारी हो काचरनी खाल ॥ विचलो गिर काहामी लियो सरायो हो घणी करिय कितोल॥३॥क०॥पठेहि पठतायो नहीं, वंध पिनयो हो तिल रे उल ठाय ॥ तिल करमे करी खालकी, जतारी हो तें साधूनी राय ॥ ४ ॥ क० ॥ वचन सु**णी राय कर**पीयो, करमोनी हो घणी विषमी वात ॥ राय राणी दोनू कहे, घरमांहे हो घमी अफली जात ॥ य ॥ क० ॥ पुरुषसिंह राजा तिहां सुनंदा हो राणी सुविनीत॥ राज ठोमी चारित्र लियो, आराध्यो हो दोनुं रूमी रीत ॥ ६ ॥ क० ॥ करम खपावी मुगते गयां. वधारी हो जग धरमनी सोह॥ अजर अमर सुख शाश्वतां, एहवी काणी हो काजो सह कोय ॥ ३॥ क०॥ श्रद्धारशे इग्यागेनेर, चेत्र मासे हो श्रुद्धि सानम जोय ॥ लामणे गाम सृखी सदा. श्रीते श्रिथको हो सिच्छामि फुक्कहोय ॥०॥क०॥ ॥ और श्री मेश मुनिने नौशियं कर्णे॥

॥ द्रांद्रा ॥ नकल निक्कि दायक सटाः वीदा जिनराय ॥ मह्युरु मामिनि नरम्बनि, प्रेमे गम्रे पाय ॥ १ ॥ त्रितुवनपनि त्रिशला नणाः इन गुण गंत्रीर ॥ शासन नायक जग जयोः हेमान वस वीर ॥ १ ॥ इक दिन वीर जिणे-ते. चरणे करि परणाम ॥ त्रिक जीवना हिन गी, पूर्व गोनम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग त्रारा-ये, कहो किण परे श्ररिहंत ॥ सुधा सरस नव यन रस, जांग्वे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ श्रांतिचार

( ६१ )

परी वहुमान ॥ सूत्र ग्रार्थ तज्ज्ज्य करी स्थां, जणीय वही उपधान रे॥ १॥ प्राणी ॥ झा०॥ हानापकरण पाटी पोघी. नवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी श्राशातना, झान जिक्त न संजाली रे॥३॥ प्राणी॥ ज्ञा०॥ इत्यादिक विपरीतपणायी, झान विराध्युं जेह ॥ त्र्या जव पर्जव विषय जवोजव, मिठाजुक्कम तेह रे ॥ ४॥ प्राणी समकित ख्यो शुरू जाणी॥ ए व्यांकणी॥ जिनवचने शंका निव कीजे, निव परमत ग्राजिन साख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे॥ ए॥ प्राणी॥ स०॥ मृहपणुं ठेको परशंसा, गुण्यंतने घ्याट्रिय ॥ साहामीने धर्मे करी थिरता, जिक्त प्रजावना करीये रे॥६॥ प्राणी ॥ स॰ ॥ संघवेत्य प्रासाद तणो जे, ग्रव-र्णवाद मन खेल्यो ॥ इत्य े

क्यो, विश्वसंत्रं उवस्यो रे

इत्यादिक विपरीत पणापी, समकित संक्रुं जेह ॥ ह्या जव०॥ मिद्या०॥ ७ ॥ प्राणीचारित्र ह्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, ब्याठे प्रवचन माय ॥ साधुनणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे॥ ए॥ प्राणी ॥ चा० ॥ श्रावकने घमं सामायिक, पास-ह्मां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे छाठे, प्रव<sup>.</sup> चनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ इत्या-दिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोट्युं जेह ॥ आ जव०॥ मिहा० ॥ ११॥ प्रा०॥ चा०॥ बारे जे दे तप नवि कीधुं, ठते योगे निज शक्ते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविएं जगतेरे ॥ ११ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज छाचारे एणि परे, विविध विराध्या जेह ॥ आ जव० ॥ मिठा० ॥ १३ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अति चार आलोइये ॥ वीर जिऐसर वयण

सुणीने. पाप मयल सिव घोड्ये रे ॥१४॥प्राणी॥चा०॥ ॥ डाल बीजी ॥ पामी सुग्रुरु पसाय ॥ ए देशी॥

॥ पृथिवी पाणी तेज. वाज वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंज स्त्रेत्र जे खे िियां ॥ कृवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंज अनेक टांकां जोयरां ॥ मेकी माल चणावीयां ए ॥ खींपण घुंपण काज. इणी परे परपरे ॥ पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥ घोयण नाइण पाणी. कीवण अपकाय ॥ ठोती धोती करी मृह्य्यां ए॥ जाठीगर कुंजार, लोह सोवन गरा ॥ जामजुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण राकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रस-वती ए ॥ इणी परे कर्मादान, परे परे केलवी ॥ तेज वाज विराधिया ए ॥ ४ ॥ वामी वन आराम वावि वनस्पति॥ पान फूल फल चूंटीयां ए॥ पोहोक पापमी ज्ञाक, ज्ञेक्यां शूकव्यां ॥ द्वंयां

नव सेदी आप ॥ जे जिहांनी ने निहां गहीं जी. कोइ न आबी साथ रे ॥ जिल् ॥ ३ ॥ मिला रयणीनोजन जे कया जी. की थां नत्य अनत्य ॥ रसना रसनी लालचे जी. पाप कम्यां अत्यक रे ॥ जिल् ॥ ४ ॥ मिल् ॥ जन लेइ विसारियां जी. वली जांग्यां पच्चम्काण ॥ कपटहेनु किरिया करी जी. की थां आप बखाण रे ॥ जिल् ॥ ८ ॥ मिल्॥ त्रण ढाल आले छहे जी. आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधन नणों जी. ए पहेलों अधि-कार रे ॥ जिल् ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलकीनी देशी ॥
पंच महात्रत छाटरा ॥ साहेलकी रे ॥
छथवा ख्यो त्रत वार तो ॥ यथाशक्ति त्रत छाटरी
॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ त्रत लीधां
संजारीये ॥ सा० ॥ हियके धरिय विचार तो
शिवगति छाराधन तणो ॥ सा० ॥ ए वीजो

लिकार के ॥०॥ तीय लोकारिये॥ साला नंति नंतियो सात्त नं ॥ सन नंति स्ते ता इतां । याः । जोट्यं सेष न सत्त तो ॥ ३॥ मां वित्र को नित्रांते । सार नित्रंते व त्राले वत् में।। गर्य देव तम दिल्से प माण। दीने इस पीट में।। ४॥ यामी मेप समापि ॥ सार ॥ के जपनी अर्थाति की ॥ राज्यन करेंग की मानले। सार ॥ ए जिन्हासन नीन नो ॥ ॥ नातिमं अने ननाति ॥ नात्॥ एतन वर्षमा मार में।। तिप्रमित त्यामधन मली ॥ सार ॥ र्जाजो ध्यस्किम नो ॥ १॥ मृता-याद हिला चोरी समावस पन समा भेवून तो ॥ क्रीय मान माणा कृत्ता गनाचा प्रेम हेत् वेतृत्व ने।।।।। निजा कलत न किलीय ॥ ना०॥ कृती न र्रोत लाख ना ॥ उनि लाउनि शिध्या नजी ॥ मा० ॥ माया मीम जंजाल नी ॥ ए॥ वि विध त्रिविध वोसिराचिये ॥ सात ॥ पापम्णान छढार तो ॥ शिवगति ज्याराधन तणो ॥ सात ॥ ए चोष्रो छिधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाख पांचमी ॥

॥ हवे निःसुणी इहां छावीयाए ॥ ए देशी ॥

जनम जरा मरणे करी ए. ए संसार असार नो ॥ कस्त्रां कर्म सह अनुजवे ए. कोइ न राख-णहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिक नगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजेननो ए. साधु शरण ग्रुणवंत तो ॥ २ ॥ व्यवर मोह स<sup>वि</sup> परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिव-गति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥३॥ त्रा जव परजव जे कस्त्रां ए, पाप कर्म केइ खाख तो॥ आत्मसाखे ते निंदीये ए, पिकसिये गुरु साख तो ॥ ४॥ मिथ्यामित वर्त्तावियां ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो॥ कुमति

कदाबहुने वेशे ए. वेखी घाष्यां उत्सूत्र तो ॥५॥ घड्यां घमाव्यां जे घणां ए. घंटी हुल हुथीयार नो ॥ त्रव त्रव मेली मृकीयां ए. करता जीव नंदार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पठी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ त्रा नव परनव जे करवां ए. इस छाधिकरण छानेक तो॥ त्रिविध त्रिविध बोम्निराबीचे ए. छाणी हृद्य विवेक तो ॥ ७ ॥ फुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्त्रां परिहार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए. ए विहा अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ खादि तुं जोड्ने खापणी ॥ ए देशी ॥

धन धन ते दिन माहरो, जिहां की धो धर्म ॥ दान जीयल तप आदरी, टाल्यां छुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ ज्ञेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे की धी यात्र ॥ सुगते जिनवर पत्नीपा, वर्ती पारवां पात्र ॥ ५० ॥ २ ॥ पुस्तक द्यान लगातीयां, जिलहर जिणनेत्य ॥ संघ नतृतिथ सानव्याः ए सान खेत्र ॥ ५० ॥ ३ ॥ पिकसमणां सुपंर कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सृरि उपनायने, दीधां बहुमान ॥ ४० ॥ ४ ॥ भर्मकारज अनुसोडिये. इम बारोबार ॥ शिवगनि स्त्रागधन तणा, ए सातमो व्यधिकार ॥ घ० ॥ ए ॥ जाव जलो मन खाणीये, चित्त छाणी ग्राम ॥ समता नाव ना-वीये, ए व्यानमराम ॥ घ० ॥ ६॥ सुख ५:ख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे व्याचस्वां, जोगविये सोय ॥ घ० ॥ ७ ॥ समना विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठार जपर ते लीपणुं, **फांखर चित्राम ॥ घ**० ॥ ७ ॥ जाव जली परे जावीये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ धण॥ ए॥

Farr start of the contract of Fire First to the term in the process of the first सभा मार्च भाषा । समार महिल्ला, के बंध ! मन्त्राप्त ॥ अली क्ष्मी पर्यान्य व्यान नेतर ए एक जरती नेते, जिल्लार स्वाहर ॥१०० भीमनीने माली, माक्त पंताका ॥ फण धर फीटीने, प्रगत गठ फुलमाच ॥ जित्रकारे योगी, मोतन पृथ्यो कीच ॥ इस मणे मंत्रे काज यणानां निक्त ॥ ए॥ ए दश लिक्कारे, तीर जिलेसर जाएगो ॥ पाराधन केरो, विधि जेले चितमां राष्यो ॥ तेल पाप पराखी, जब तय पुरे नाम्यो॥ जिन विनय करतां, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ७ ॥ इति ॥

। हाल त्याग्रमी ॥ नमो जित्र जावगुं ए ॥ ए देशी सिकारय राय कुलितलो ए, त्रिशला मात



ठ स्व नियारण जग जयां।। भी भिर जिस स नरण श्रुणतां, व्यभिक्त मन उत्तर पर्यो ॥ १॥ श्री विजय देव सुरींद पटघर, तीर्प वेगम उणि वंग ॥ तप गतपति श्री विजयप्रज्ञासरि, सरितेज कगमग ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सकि जिल्य तानक, कीर्निः विजय सुर गुरु समो ॥ तस जिल्य वानक विनय-विजये. शुएयो जिन नोवी गर्मा ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत जगण बीजे, रही रांदेर चौमास ए॥ विजय दश्मी विजय कारण, कियो गुण अप्रयास ए ॥ ४ ॥ नरतव त्र्यारा धन सिक्कि साधन,सुकृत बील विलास ए॥ निर्जरा हेन तवन रचियुं, नामे पुएय प्रकाश ए ॥ ए॥ इति श्री छाराधना रूप पुएय प्रकाशस्तवनं संपूर्ण ॥ श्लोक ॥ ११९॥

> ॥ अथ श्री शांतिजिनस्तवन ॥ धोलनी देशी ॥ शांति जिनेसर साहेच वदो, अनुजब रसनी

( 38 )

मुनिवर दंदी, जिन पिनमा मन रंगे रे ॥ शांतिष

॥ शांति०॥ ए॥ इत्यादिक वहु पाठ कह्या ठे, स्त्रमांहे सुखकारी रे ॥ स्त्रतणो एक वरण जस्थापे, ते कह्यो वहुल संसारी रे ॥ शांतिणारणा ते माटे जिन **छा**णा धारी, कुमति कदाग्रह <sup>नि-</sup> वारी रे ॥ जिक्ति तणां फल उत्तराध्ययने, वोध वीज सुखकारी रे ॥ शांति ।। ११ ॥ एक जवे दोय पदवी पाम्या, शोलमा श्रीजिनरायरे॥ मुज मन मंदिरिये पधरावो, धवल मंगल गवरायरे ॥ शांति ॥ ११ ॥ जिन उत्तम पद्रूप अनुपम, कीर्ति कमलानी शालारे॥ जिन विजय कहे प्रज

### ( 99 )

जीनी जिक्त, करतां मंगल माला रे ॥३॥०॥१३॥॥॥ इति ॥

॥ ज्ञानपंचमी नुं स्तवन ॥

ऐसी विधि तेंने पाई रे। तप पंचमी करजा॥ नन्दीसूत्र विशेष आवश्यक ज्ञान कथन सुख-दाई रे। पम तिमिरको हरजा ॥ १॥ ऐसी०॥ मित अन्नावीस । श्रुतचऊदहवीस ॥ ठक अवधि नेदेगाई रे । असंख्या नेदकुं सुणजा ॥शाऐसीणा दोय जेदे मन पर्यव आख्युं ॥ क्जुविपुल गुणदाईरे <sup>एक</sup> केवल सरज ॥ ३ ॥ ऐसी**ँ** ॥ चारमूंगे एक वोलत सुंदर श्रुतज्ञाने जिनरायारे । वाणीज-/ विजीव तिरजा ॥॥। ऐसीणा ज्ञान कियामें।नाणकी मुक्ता ॥ सत्यासत्य जगाई रे । गम्या अगम्यकुं गिएजा ॥ ए ॥ ऐसी० ॥ पंचमी तपद्रो । कर्म कवोर ॥ गुण मंजरी गुणपाई रे ॥ वरदत्त सिम-रजा ॥६॥ ऐसी०॥ ग्रुज कार्तिक ग्रुदि । पंचमी

दिवसे ॥ नाण जगित ध्यान ध्याई रे। तप जावकुं धर् रजा ॥७॥ ऐसी०॥ पंचमीतप । पंचमास वरसकर॥ सेवा अईनकी पाईरे॥ शुज छानंद वरजा॥०ऐसी०

॥ महावीरस्वामी नुं स्तवन ॥

वीर प्रजु जैसे वनै वैसे तारो । मेरी करणी नाहिं विचारो ॥ अवगुण नरे अनेक मुजनीतर। ग्रुणको नही खबलेश ॥ वीर० ॥ १ ॥ मेंहूं रक अनाथ प्रजुजी। आयो शरण तुमारे॥ करुणाः सागर नाम धरावो । राखो शरण तुमारे ॥ वीर०॥ २॥ शरणे आया ने ठाम न देशो। अपनो विरुद संचारो ॥ दीन दयाबु तुमहो स्वामी । जव सायर पार जतारो ॥ वीर० ॥ ३ ॥ जव छानंत में जट-क्यो प्रजुजी। फु:ख छानंत मे पायो॥ नरक नि गो-दमें पिन्यो स्वामी । शरणे किणही न राख्यो ॥ ध ॥ पाप कर्मको पोटलो वांध्यो । कुमति सें कुमत मिलायो ॥ सद्गुरु की संगत नहीं पायो । वृथा

जन्म गमायो ॥ ८ ॥ वीर० ॥ माया कपट से किया कीनी । धर्मी नाम धरायो ॥ धर्म तत्त्वको सार न जाएयो । समिकत श्रद्धा न पायो ॥ ६ ॥ वीर० ॥ श्रवतो शरण गद्धो प्रजुतेरो । समित को संग करायो ॥ कुमित कुटिल को इर हटाके । मोक मार्ग वतलायो ॥ ७ ॥ वीर० ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवनं ॥॥ हारे मारे जोवनीयांनो लटको दहानाचार जो ॥ ए देशी ॥

हारे मारे धर्म जिएंद शुं लागी पूरण प्रीत जो. जीवमलो ललचाणो जिनजीनी ठेलगे रेलो॥ हारे मुने थाशे को इक समय प्रजुजी प्रसन्न जो, वातमली तब माहारी सिव थाशे वगे रे लो॥१॥ हारे को इ दुरजननो जंजेस्यो माहारो नाथ जो, ठेलवशे नही क्यारे की धी चाकरी रे लो॥ हारे माहारा स्वामी सिरलो कुण हे दुनीयां मां हि जो;

जङ्ये रे जिम तेहने घर आजा करी रे खा।।?।। हारे जस सेवासंती म्वारण न होते मिळ जी. गली रे शी करवी नेहणी गोतकी रे लो॥ हार जुतुं खाये ने मीठाइने माटे जो. कोइ रे गरमा-रयविण नहीं प्रीनमी रेखो ॥३॥ हांर प्रजु छंतर-जामी जीवन प्राण त्याधार जा, वाह्या रे निव जाणे कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे माहारा लायक नायक जगत वत्सल जगवान जो, वारु रे ग्रणकेरो साहिच सायरो रे लो ॥ ४ ॥ हारे प्रज बागी मुफने ताहरी माया जोर जो. अबगारे रह्याथी होय उसिं गलो रे लो ॥ हांरे कुणजाणे श्रंतर्गतनी विण महाराज जो, हेजे रे हसी बोलो वांमी आमलो रे लो ॥ ए ॥ हांरे तहारे मुखने मटके अटक्यु महारुं मन्न जो, आंखमली आणी-याली कामणगारीयुं रे लो ॥ हांरे मारे नयणां लंपट जोने खिण खिण तुक्त जो, रातां रे प्रजुरूपे

न रहे वारियुं रे खो ॥ ६ ॥ हांरे प्रज द्या तो पण जाणजो करीने हज़्र जो. नाहारी रे विल हारी हुं जाड वारणे रे खो ॥ हांरे किय रूप विव्ययनो मोहन करे द्यारदास जो. गिम्ब्याथी मन खाणी जलट द्याने घणे रे खो ॥ ३ ॥ इति ॥

# ॥ छत्र श्रीवीरप्रजुनुं दीवाखीनुं स्तवन ॥

मारगदेशक मोहानो रे, केवल ज्ञानित्थान॥
नाव द्या सागरप्रजु रे. पर छपगारी प्रधानो रे॥
रे॥ वीर प्रजु सिक थया॥संघ सकल आधारो रे,
हवे इण जरतमां॥ कोण करशे छपगारो रे॥
वीर०॥ १॥ नाथ विहुणुं सैन्य ज्युं रे, वीर
विहुणो रे संघ॥साधे कोण आधारथी रे. परमा
नंद अजंगो रे॥ वीर०॥ ३॥ माना विहूणो
वाल ज्युं रे, अरहो परहो अथमाय॥वीर विहुणा
जीवमा रे, आकुल ट्याकुल थाय रे॥वीर०

संज्ञय वैदक वीरनो रे विरह ते केम खमाय॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ बीरणा ए॥ निर्यामक जब समुद्धनो रे. जबअमि सत्रवाह ॥ ते परमेश्वर विण सले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम श्राधार ॥ इवे इहां श्रुत ख्याधार हे रे, छहो जिनमुद्धासारो रे । वीरण ॥ शा त्रण काले सिव जीवने रे, खागमथी खाण्द॥ सेवो ध्यावो जवि जना रे, जिनपिनमा सुखकंदो रे॥वीर०॥७॥ गणधर छाचारज मुनि रे, सहुने इ्णी परे सिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव चंड्र पद लीध रे ॥ ए ॥

॥ अथ श्री एकाद्द्यीनी सजाय प्रारंजः॥ आज महारे एकाद्द्यी रे, नणद्व मौन करी मुख रहिये॥ पूठ्यानो परुत्तरपाठो, केहने कांइ न कहिये॥ आ०॥ १॥ महारो नणदोइ

तुकने वाट्हो, मुकने ताहारो वीरो॥ धूत्रामाना वाचका चरतां, हाथ न आवे हीरो ॥ आ० ॥श॥ घरनो धंधों घणो कस्त्रो पण, एक न आठ्यो श्रामो ॥ परजव जातां पालव काले, ते मुजने देखामो ॥ व्या० ॥ ३ ॥ मागशिर ग्रुदि व्यगीया-रश महोटी, नेवुं जिनना निरखो ॥ दोहोढशो कल्याणिक महोटां, पोथी जोई ने हरखो॥ श्रा० ॥ ४ ॥ सुत्रत रोठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहयो ॥ पावक पूर सघलो पर जाल्यो, एह्नो कांई न दहीयो ॥ आ०॥ ४॥ आठ पहोर पोसो ते करिये, ध्यान प्रजुनुं धरिये ॥ मन वच काया जो वश करिये तो जब साथर तरिये ॥ था। १ ॥ ईर्या समिति जापा न वोले, आफुं अवक्षुं पेखे ॥ पिकमणाद्युं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे॥ ऋा०॥ ७॥ कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे मनमांही ॥ चितकुं तो चिहुं-

वेरीनी पुष्टिनो करनारो मोहोटी चिंता शोक गारव छने खेदनो करनार, संसाररूप छगाध विद्यानो सिंचवावालो, कूम कपट छने क्लेशनो ञ्चागर, मोहोटा खेदनो करावनारो, मंदबुद्धिनो **यादस्यों, उत्तम साधु निर्मथोये जेने** निंघो हे, अने सर्व लोकमां सर्व जीवोने एना सरिखो वीजो कोइ विपम नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिवंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, पांच आश्रवनो आगर, अनंत दारुए डुःख अने जयनो देवावालो, महोटा सावद्य ट्यापार कुवा-णिज्य कुकर्मादान नो करावनारो, अध्रव, अनित्य, अशास्वतो, असार, अत्राण, अशरण एवा जे आरंज अने परिमह तेने हुं क्यारे ठांकीश ? जे दिवस ठां िश, ते दिवस महारो धन्य ठे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

२ क्यारे हुं मुंक यड्ने दज्ञ प्रकारे यतिधर्म

भारी, नववामे विद्युद्ध ब्रह्मचारी सर्व सावद्य परि-हारी ष्यणगारना सत्तावीश ग्रणधारी. पांच समिती त्रण गुप्तिये विद्युद्धविहारी, मोहोटा अनियहनो धारी, वेहेतालीश दोप रहित विशुद्ध श्राहारी. सत्तर जेदे संयम धारी, बार जेदे तपस्याकारी. श्रंन श्राहारी, प्रांत श्राहारी श्ररस श्राहारी, विरस याहारी, बुख्व याहारी, तुत्र याहारी, यंत-जीवी, प्रांतजीवी, व्यरसजीवी, विरसजीवी, खुरुख-जीवी तुज्ञजीवी, सर्व रस त्यागी, ठकायनो दयाल निर्लोजी, निःस्वादी, पंखी तुल्य, वाय-रानी परे अप्रतिवक्त विहारी, वीतरागनी आज्ञा-सहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं केवारे थईश ? जे दिवस हुं पूर्वोक्त ग्रणवान या इश ते दिवस धन्य वे॥ ए वीजो मनोरथ ॥ ३ क्यारे हुं सर्व पापस्थानक खालोई, निःशस्य

थइ, सर्व जीवराशि खमावीने, सर्ववत संचारीने,

शहार पापस्पान कपी जितियं जितियं वागरीने. चारे बाहार पनस्तीने, बरीरने, बेटेदे सामी-च्नासे वोसगर्वनि जण पागधना पागपती पकी. चार मंगलिक रण चार गरण मुखे उचरनो णको. सर्व संसारने पून देनो यको, एक अस्हिन,वीजा निक, बीजा साधु, अने चोषों केनलि प्ररपिन-धर्म, तेने ध्यावतो पको, गरीरनी ममता रहित थयो थको, पाढोप गमन संपारा महिन, पांच अतिचार टालनो अको, मरणने अण्यांठनो अको. एहवुं पंकित भरण श्रंतकाले मुक्तने कराविश ? ॥ ए त्रीजो मनोरय ॥

ए त्रण मनोरथने श्रावक, मन, वचन छने कायायेकरी शुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्क्तारीने संसारनो छंत करे, मोक्हप शास्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥

## 'र्रे। हिनान नव, ।

## १४ नियम धारणे की विधि।

प्रिय बांपवा ! देखां जैन धर्मकी कैसी अर्जी गीतियें हैं और जानियों ने केने कैसे महज रम्ते पाप में बचने के लिये बनाये हैं. भन्य है ! विचार कर देखना चाहिये कि संसारी जीवों में अविग्निकी किया चोंदद (१४) राज-केंकिमें जिननी बस्तु हैं सबकी धारही है, बाहे नोग में श्राव चाहे नहीं. इसी कारण ने जीव श्रनादि काल से कमों से जारी हो रहा है श्रीर वत प्रत्यारचान (पद्मरुखान) होवे तो जितनी नोग में श्रावें उन्नी ही की किया लगे, वाकी सब बृट जावे. ज्ञानी महागजने पाप से बुटने का कसा सहज रम्ना बनाया है. चौदह नियम धारने इनने सहज हैं कि पांच मिनट में धारे जाते हे श्रीर इंग्ला होय जितना रखवी.

काम त्यटकता नहीं: केरल ज्ययोग रणना ना-हिये. इसका राज्यास जलदी हो जाता है. फिर कुठ जी जार नहीं मालम होता. त्यार फायहा इतना है जिसका पार नहीं: जैसे समुद्र वसवर पाप से तृटके एक विन्दु से जी कमती रहजाय तो ऐसे फायदे को मत ठोको।

श्रावक को वारह बनक्ष लेने तो जहर चा-हिये, जसमें जी खुसी होय जितना रख ली-जिये; किनताई बहुत कम है. जबतक वारह वत नहीं जी लिये हैं तो जी चोटह नियम धारने तो अवस्य ही चाहिये. इसका अज्यास करते १ वारह बत जी जदय आ सकेंगे. क्योंकि

<sup>\*</sup> वारह व्रत यह हैं-१ म्थूल प्राणातिवात विरमण. २ स्थूल-मृपावाद विरमण. २ स्थूलअटत्ताटान विरमण. ४ स्थूल मेथुन विरमण. ९ स्थूल परिग्रह परिमाण. ६ दिक्षरिमाण. ७ मोगोपमोग परिमाण. ८ अनर्थदंड विरमण. ९ सामायिक, १० टेशावकाशिक, ११ पोषध, १२ अतिथिसंविभाग,

सीडी सीड़ी चढा जाता है. अगर नियम धारने-वाले की अकस्मात् मृत्यु हो जाय तो प्रत्या-ख्यान रहने से सुगति में जावे ऐसे अनेक फायदे हैं।

प्रिय जाड्यो ! ऐसी जोगवाई पूरे पुन्यों से मिलती है. मनुष्य जन्म, छार्य केन्न, जत्तम कुल, जैन धर्म यह सब पायके जो बने सो करलो, बार बार ऐसा जोग मिलना किन है.

चौदह नियम धारने की विधि।

दिनके चार प्रहर के नियम सवेरे मुंह धोने के पहले धारके सामको पार लीजिये. रा-त्रिके चार प्रहरके फिर साम को धारके सवेरे पार लीजिये. नियम तीन नवकार गिनके लीजिये, खोर तीन नवकार गिनके पारिये. पारने के वख्त जो रक्खा था जसको याद करके संजाल —

जिये. कमती लगा उसका लाग हुआ, हल में ज्यादा लगा उसका "मिच्छामि फुक्कम" ही जिये च्योर च्याठ प्रहर के नियम धारने से चार प्रहर के नियम धारने में सुगमता रहती है क्यों कि पारने के वक्त जो जो वस्तु जोग में च्याया हो उसका मिलान सुगमता से हो सकता है।

कोई व्रतधारी श्रावक जन्म जरके निर्वाह के वास्ते ज्यादे ज्यादे वस्तु रखते हें तो १४ नि-यम धारने से जनका जी आश्रव संक्षेप हो जाता है इस वास्ते व्रत धारी को छोर अवि-रतिको अवस्य १४ नियम धारने चाहिये.

चीवह नियमें की गाया। सचित्ते दठवे विगेष्ठ वाण्ह तंबोलें वर्ष्य कुर्सुमेसु। वार्हण सर्यण विलेबैण वंदी दिसिं न्हाणै जत्तेसें रा। गायाका संक्षिप्त अर्थ।

र सचित्त-कचा पानी, हरी तरकारी, फल, पान, हरा दांतन, निमक आदि, १ इट्य-जितनी बीज मूहमें जावे उतने ड्वय-जल मंजन, दांतन, रोटी, दाल, चावल, कढी. साग, मीठाई, पूरी, घी, पापम, पान, सुपारी, चूरण आदि (३विगय-रे जिनमेंसे मधु, मांस, माखन, छौर मदिरा ये ४ महाविगय त्रानद्य होनेसें, श्रावकको त्रावस्य लाग करने चाहिये और ६ श्रावकके खाने योग्य हैं, घी, तेल, घूध, दही, गुफ, अथवा मीठा पकान्न (जो ककाहीमें जरे घी अथवातेल में तला जाय.) ४ जपानह-जूता, चट्टी, खमाजं, मोजा यादि (जो पांवमें पहेना जाय) ए तंबोल पान, सुपारी, इलायची, लोंग, पानका मसाला त्रादि. ्र वत्थ (वस्त्र)-पगडी, टोपी, श्रंगरस्ना, चोगा, कुरता, धोती, पायजामा, फुपद्दा, चहर, अंगोठा. रुमाल, आदि मरदाना जनाना कपना (जो आहने पहरनेमें आवे.) १ कुसुमेसु-फूल, फूलकी चीचें जैसें सिज्या, पंखा,सेहरा,तुरी, हार,

ानर (ने नी न माने में भोर) हार न (मापी) गामी, फिट्न, शिगरम,दापी,पोसा,रप,पानधी कोली, रेख, हारपे, नाप, पहाल, रटीगर पलन त्यादि यानि तरता, फिरता, चरता पार चमता. सयन ए कुरसी, नोकी, पहा, पलंग, तरात, मेज, सु खासन पाढि (सोने वा वैजनेकी नीजे). १० विंह-पन तेल, केशर, चंदन, तिलक, सुरमा, काजल, छबन टना, हजामत, बुग्स, कंगा,काच देखना, दबाई, श्रादि ( जो चीज गरीर में लगाई जावे ). ११ वंज ( त्रह्मचर्य )-स्त्री, पुरुषने, सुङ् मोरेके न्याय तथा वाह्य विनोदकी संख्या करलेनी. श्रावक परदारात्याग छोर स्वदारासेंही संतोष रखें, उसका जी प्रमाण करें. १२ दिसा ( १० दिशा ) शरीर से इतने कोस ( लंबा, चोका, उंचे, नीचे) जाना छाना, चिष्ठी तार इतने कोस जेजना, माल श्रादमी इतने कोस जेजना, तथा मंगाना. १३

हो जाय, छोर जिसमें से तेल नहीं निकले, उस अन्नको कचे रूध, दही, ठासके साथ अलग अथवा मिलाय के खाना वसा दोप कहा है. हही वगैरह खूव गरम करके साथ खाने में वि-दलका दोप नहीं है. १ स्त्राचार सब तरह का संधान ३ रोज वाद अजह्य हो जाता है. ३ कंट-मूल ३१ अनन्तकाय, यह सब से जादे दोषकी चीज होने से विलकुल ठोमने लायक है. ४ मक्तन, सहत आदि ११ अतस्य \* श्रावक को जरूर ही ठोमना चाहिये. न वृष्टे तो जितना बूटे जतना ठोसिये. थोंक से जिटहा के स्वाद के

<sup>\*</sup> १ वड्के, २ विपलक, ३ विलखणक, ४ कटंबरके, ५ मूलर ु फल, ६ मदिरा, ७ मास, ८ मयु, ९ मक्कन १० वरफ, ११ निजा, १२ ओले, १२ मर्डि, १४ रात्री मानन १५ बहुवीजा फल १६ संघान (आचार), १७ द्विंदल, १८ वेगण, १९ तुन्छ फर् २० अजाना फल, २१ चींलतरस, २२ वर्तीस अनतकाय,

हो जाय, श्रोर जिसमें से तेल नहीं निकले जस अन्नको कचे हुध, दही, ठासके साथ अलग अथवा मिलाय के खाना वका दोप कहा है. दही वगैरह खूव गरम करके साथ खाने में वि-दलका दोप नहीं है. २ श्राचार सब तरह का संधान ३ रोज वाद अनद्य हो जाता है. ३ कंद-मृत ३२ अनन्तकाय, यह सव से जादे दोपकी चीज होने से विलकुल ठोमने लायक है. ४ मक्खन. सहत छादि ११ छन्नदय \* श्रावक को जरूर ही ठोमना चाहिये. न इटे तो जितना वृटे जतना ठोमिये. थोमे से जिव्हा के स्वाद के

<sup>\*</sup> १ वहके, २ विपलके, २ विलखणके. ४ कठंबरके, ५ गूलर के फल, ६ मदिरा, ७ मांस, ८ मधु, ९ मक्खन १० वरफ, ११ निशा, १२ ओले, १३ महि, १४ रात्री भोजन १५ बहुबीजा फल. १६ संधान (आचार), १७ द्विदल, १८ वेंगण, १९ तुच्छ फल, २० अजाना फल, २१ चिलतरस, २२ वक्तीस अनंतकाय,

हो जाय, श्रीर जिसमें से तेल नहीं निकले, उस अन्नको कर्चे पृथ. दही. ठासके साथ अलग श्रयवा मिलाय के खाना वना दोप कहा है. दही वगेरह खूब गरम करके साथ खाने में वि-दलका दोप नहीं है. २ श्राचार सब तरह का संधान ३ रोज बाद श्रनदय हो जाता है. ३ कंद-मृल ३१ त्र्यनन्तकाय. यह सब से जादे दोपकी चीज होने से विखकुल ठोमने लायक है. ४ मक्कन. सहत छादि ११ छनदय \* श्रावक को जरूर ही ठोमना चाहिये न वृटे तो जितना वृद्दे जतना वोमिये. थोमे से जिन्हा के स्वाद के

<sup>\*</sup> १ वहके, २ पिपलक, २ पिलल्वणके. ४ कटंबरके, २ ग्लर के फल. ६ मिटिंग, ७ मांस, ८ मधु, ९ मक्लन १० वरफ, ११ निज्ञा, १२ लोले, १३ मिटि, १४ रात्री मोजन १९ वहुबीजा फल. १६ संघान (आचार), १७ हिंदल, १८ वैगण, १९ तुन्छ फल, २० अजाना फल, २१ चलितरम, २२ वक्तीस अनतकाय.

वास्ते जीव पाप से जारी होकर जवजब में बहुत छुख पावे ऐसा नहीं करना चाहिये इनसें जादे स्वाद की चीज बहुत हैं.

## अथ श्री श्रावककी करनी की सकाय।

॥ चौपाई ॥ श्रावक तूं उठे परन्नात । चार घनी ले पाठली रात ॥ मनमें समरे श्रीनवकार। जिम पामे जवसायर पार ॥१॥ कौन देव कौन गुरु धर्म कौन हमारे ठे कुल कर्म॥ कौन हमारे ठे व्य-वहार। एहवो चींतव जे मन मांह ॥ १ ॥ सामा-यिक लीजे मनशुद्ध । धर्मतनी हीय में धर बुद्ध ॥ पिकक्रमणा कर रयनी तसु। पातिक आलोवे आ-पसुं ॥ ३ ॥ काया सक्ति करे पञ्चख्वान । सूधी पाले जिनवर त्र्यान॥ जनजे गुनजे स्तवन सकाय। जिम हुंती नीसतारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित चोंदे निम । पाले द्या जिव तहसिम ॥ देहरे

जाय जुहारे देव। इटय नाव से करजे सेव ॥५॥ पोसाले गुरु वंदन जाय । सुनेवखान सदा चित लाय ॥ निरदृपन सुकतो त्राहार । साधांने दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ स्वामी वच्छल कीजे घना । सगपन मोटा स्वामीतना। इिखया हीना दीना देख। करजे नास दया सुविसेस ॥ १॥ घर त्रनुसारे दीजे दान । मोटासुं म कर श्रनिमान ॥ गुरु मुखे लीजे त्राख़की। धर्म न ठोको एके यमी ॥ ७ ॥ वारू शुक्त करे व्यापार। छोता अधि-काना पिन्हार॥ म जरे केहनी कूमी साख कूमा सोंस कथन मत जाख ॥ ए॥ अनंत काय कहिये वत्तीस। व्यन्नक् वावीसे विसवा विश। ते नक्ण न करीजे किमें। काचा कवलां फल मत जिमें॥१०॥ रात्री जोजननो वहु दोष।जाणीने करिजे संतोष॥ साजी साबू खोह ने गुली। मथु धाहमी म वेचे वर्ती ॥ ११ ॥ वित म करावे रंगण पास । दृपण

घणां कह्या हे तास । पाणी गलजे वे वे वार । अण-गल पीधां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना कर जतन्न । पातक ठोमी करजे पुन्न ॥ ठाणां इंधण चूलो जोय । वावरजे जिस पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर । अणगल नीर में धोए चीर ॥ वारे व्रत सूधा पालजे । श्रतीचार सगला टालजे ॥ १४ ॥ कहिया पनरे करमादान । पाप-तणी परहरजे खान ॥ शीश म क्षेजे अनरथदंम। मिथ्या मैल म नरजे पिंस ॥ १५ ॥ समिकत शुद्ध हीयमे राखजे । वोल विचारीने जाखजे ॥ **जत्तम ठामे खरचो वित्त । पर उपगार करो** शुन चित्त ॥ १६ ॥ तेल तक घृत इध ने दही । उघा-मा मत मेलो सही ॥ पांचे तिथ म करो आरंज। पालो शील तजो मन दंज॥ १९॥ दिवश्चरम कीजे चलविहार। च्यारे आहारतणो परिहार॥ दिवसतणां त्रालोए पाप । जिम जांजे सघला

संताप ॥ १०॥ संध्याये आवश्यक साचवे। जिन-वर चरण शरण जव जवे ॥ च्यारे शरण करी टट होय । सागारी आणशण ले सोय ॥ १ए ॥ करे मनोरय मन एहवा। जाऊं तीर्थ शत्रुंजे जे-हवा॥ समेतशिखर आवृ गिरनार। जेटीश कवहुं धन अवतार॥ १०॥ आवकनी करणी ठे एह। एह्थी याये जवनो ठेह ॥ आठे करम पमे पा-तला। पापतणा ट्टे आमला॥ ११॥ वारू लहीये अमर विमान । अनुक्रम पामे शिव पुरथान ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह । करणी छःखहरणी ठे एह ॥ ११॥

र्रात श्रावम करनी समाप्त ।

अथ स्तक विचार प्रारंज ।
॥ प्रथम कोइने घरे जन्म थाय ते विषे॥ ।
१ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा

दिन अगीयार अने रात्रे जन्में तो दिन वारतुं सूतक.

- २ वार दिवस घरना माणस देव पूजा करे नहीं.
- ं ३ न्यारा जमता होय, ते वीजाना घरना पाणीथी जिन पूजा करे अने सूवावम करनारी तथा करावनारी ने तो नवकार गणवो पण सूजे नहीं.
  - ४ तथा प्रसववाली स्त्रो, मास एक सुधि जिन-प्रतिमा ना दर्शन करे नहीं तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे, अने साधुने पण वोहोरावे नहीं, एम विचारसार प्रकरण सध्ये कह्युं ठे.
  - **ए घरना गोत्रीने दिन पांचनुं म्**नक जाणवुं.
  - ६ व्यवहार जाण्यनी मलयगिरि कृत टीका मध्ये जन्मनुं स्तक दिन दशनुं कह्युं वे
  - उ गाय, घोमी, उंटणी, जेंस, घरमा प्रसवे, तो

दिन वेनुं स्तक श्रने वनमा प्रसवे. तो दिन एकनुं सृतकः

- ण नेंस प्रसवे, तो दिन पंदर पठी तेनुं दृध कह्ये.
- ए गाय प्रसवे, तो दिन दश पठी तेनुं इध कह्पे.
- रेण् ग्राली वकरी प्रसाव तो. दिन छ्याग्र पृत्री तेनुं दृध कह्पे.
- ११ जंटणी प्रसवे, तो दिन दश पठी तेनुं दृध कह्पे.
- ए दास दासी के जेनो छापणेज छाश्रय जनम याय, छने जे छापणीज नजर छागल रह्यां होय, तो तेनुं चोवीश पहार सुधीस्तक जाणवुं.
  - ॥ क्तुवंती स्त्री संवंधि सूतक निर्णय ॥
  - र दिन त्रण सुधी जांमादिकने तुवे नहीं, दिन चार लगे पिनक्रमणादिक करें नहीं पण तपस्या करें, ते लेखें लागे. दिन पांच पठी जिन पूजा करें. रोगादिक कारणें त्रण दिवस वीत्या पठी पण जो रुधिर दीठामां आवे, तो तेनो दें

नथी. विवेक करी पवित्र थई जिनप्रतिमा-दिक जिनद्दीन अयपूजादिक करे, तथा साधु ने पिनलाजे, पण जिनप्रतिमानी अंगपूजा न करे. एम चर्चरीयंथमां कह्युं हे.

॥ मृत्यु संवंधी सूतकनो विचार ॥

- १ घरनुं कोइ मरण पामेखुं होय तो सूतक दिन वारनुं तेने घरे साधु आहार खिये नहीं, तेना घरना अग्नि तथा जखथी जिन पूजा थाय नहीं, एम निशीय चूणींमां कह्युं ठे. निशीय स्त्रना शोलमा जदेशामां जन्म तथा मरणनुं घर छुगंठनिक कह्युं ठे.
- २ मृत्युवाला पास सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
- ३ कांधिया, देवदर्शन पिकक्कमणादिक त्रण दिन न करे, परंतु जो नवकारनुंध्यान मनमां करे, तो तेनो कांड् पण वाध नथी.
- ४ मृतने त्र्यमक्या न होय तो स्नान कीधे शुद्धयाय:

( २०७ )

नथी. विवेक करी पवित्र थई जिनप्रतिमा-दिक जिनद्दीन अग्रपूजादिक करे, तथा साधु ने पिक्लाजे, पण जिनप्रतिमानी अंगपूजा न करे. एम चर्चरीग्रंथमां कह्युं हे.

॥ मृत्यु संवंधी सूतकनो विचार ॥

- र घरनुं कोइ मरण पामेखुं होय तो सूतक दिन वारनुं तेने घरे साधु आहार लिये नही, तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिन पूजा थाय नही, एम निशीथ चूर्णीमां कह्युं ठे. निशीय सूत्रना शोलमा जहेशामां जन्म तथा मरणनुं घर छुगंठनिक कह्युं ठे.
- श मृत्युवाला पास सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
  ३ कांधिया, देवदर्शन पिकक्षमणादिक त्रण दिन न करे, परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे, तो तेनो कांइ पण वाध नथी.

४ मृतने अमक्या न होय तो स्नान की धे शुद्धयाय'

५ अन्य पुरुष जो मृतने अमक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पिकक्षमणादि न करे.

६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेने घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.

<sup>छ वेपना पालटनारा आठ पोहोर सूतक पाले.</sup>

ण जन्मेते दिवसे मृत्यु थाय अथवा देशांतरे मरण पामे अथवा जति मरे तो दिन एकनुं सूतक.

श्वाठ वर्षथी नानुं वालक मरण पामे, तो दिन श्वाठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणमां कह्यं ठे.

रिण्गाय प्रमुखनुं मृत्यु याय तो कलेवर घरघी वाहेर लिह गया पठी दिन एक लगे सृतक अने अन्य तिर्यचनुं कलेवर पमयुं होय, तेन तो घरघी वाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सृतक पठी नहीं.

दास दासी जे आपणी निश्राये घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवसे सूतक लागे

- १२ जेटला मिहनानो गर्ज पमे, तेटला दिवस सृतक.
- १३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांजले तो एक तथा वे दिवसनुं सृतक लागे, एम कल्पजाः एमां कह्युं ठे.
- १४ गोमूत्रमां चौवीश पहोर पठी, नेंसना मूत्रमां शोल पहोर पठी, गामर गधेमी तथा घोमी-ना मूत्रमां छाठ पहोर पठी छने नर नारी-ना मूत्रमां छंतर मुहूर्त पठी संमूर्च्ठिम जीव उपजे ठे.

॥ समाप्त ॥

पुम्तक मिलने का ठिकाणा— वाव्रू सुमेरमवजी सुराणा, ठिकाणा–मनोहरदास का कटरा। वड़ा वाजार (कलकसा)

जार्ज विटिंग वक्त, कालर्नग्व, काणी में मुद्रित।